फार्मर्स फर्स्ट परियोजना

हर कदम, हर डगर
किसानों का हमसफर
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद

Agri search with a human touch

Farmer FIRST Programme
Enriching knowledge, Integrating Technology

# ग्रामीण महिलाओं की आय वृद्धि एवं पोषण सुरक्षा हेतु
# बकरी पालन

राजेश कुमार, एम.पी.एस. यादव, शशिकान्त, देवराज,
सी.पी. नाथ, चन्द्रमणि त्रिपाठी, प्रदीप कुमार एवं शिवाकान्त

**भाकृअनुप–भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान, कानपुर – 208 024**

बेवसाइटः https://iipr.icar.gov.in

भाकृअनुप
ICAR

INDIAN INSTITUTE OF PULSES RESEARCH
IIPR
भादअस

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी बकरी को 'गरीब की गाय' कहा करते थे। आज के परिवेश में भी यह कथन महत्वपूर्ण है। आज जब एक ओर पशुओं के चारे–दाने एवं दवाई महँगी होने से पशुपालन आर्थिक दृष्टि से कम लाभकारी हो रहा है, वहीं बकरी पालन कम लागत एवं सामान्य देखरेख में गरीब किसानों एवं खेतिहर मजदूरों के जीविकोपार्जन का एक साधन बन रहा है। इतना ही नहीं, इससे होने वाली आय समाज के आर्थिक रूप से सम्पन्न लोगों को भी अपनी ओर आकर्षित कर रही है। बकरी पालन स्वरोजगार आर्थिक रूप से कमजोर लोगों की आय को बढ़ाने का एक प्रबल साधन बन रहा है।

## बकरी पालन की उपयोगिता

बकरी पालन मुख्य रूप से मांस, दूध एवं रोआ, पसमीना एवं मोहेर के लिए किया जा सकता है। झारखंड राज्य में बकरी पालन मुख्य रूप से मांस उत्पादन हेतु एक अच्छा व्यवसाय का रूप ले सकती है। इस क्षेत्र में पायी जाने वाली बकरियाँ अल्प आयु में वयस्क होकर दो वर्ष में कम से कम 3 बार बच्चों को जन्म देती हैं और एक वियान में 2–3 बच्चों को जन्म देती हैं। बकरियों से मांस, दूध, खाल एवं रोंआ के अतिरिक्त, इसके मल–मूत्र से जमीन की उर्वरा शक्ति बढ़ती है। बकरियाँ प्रायः चरागाह पर निर्भर रहती हैं। यह झाड़ियाँ, जंगली घास तथा पेड़ के पत्तों को खाकर पौष्टिक पदार्थ जैसे– मांस एवं दूध उत्पादित करती हैं।

## परिचय

बकरी ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ है, और इससे प्राप्त होने वाली वस्तुएं जैसे– दूध, बाल, चमड़े एवं जैविक खाद इत्यादि सभी प्रकार से लाभदायक है। इसके पालन–पोषण में थोड़ी सावधानी एवं जानकारी से अधिक से अधिक लाभ प्राप्त किया जा सकता है।

## प्रजनन

अच्छी नस्ल की मांसवाली या दूधवाली या दोनों प्रकार की बकरी देशी या संकर का चुनाव करें।

बकरी गर्म होने पर देशी, विदेशी या संकर नस्ल से पाल दिलवाएं। इसकी सुविधा राँची पशुचिकित्सा महाविद्यालय में उपलब्ध है।

## पाल दिलाने का उचित समय

गर्म होने के 20–30 घंटे के अंदर ही प्राकृतिक या कृत्रिम रूप से गर्भाधान कराएँ।

## बच्चा पैदा होने का उचित समय

लगभग 145–150 दिनों के गर्भाधान के बाद बच्चों का जन्म होता है। अतः पाल दिलाते समय यह ध्यान देना चाहिए कि बच्चे अधिक जाड़े या गर्मी के मौसम में पैदा नहीं हों।

## गाभिन (गर्भवती) बकरी की देखभाल

बकरियों को सुबह 8 बजे से 11 बजे तथा शाम 3 बजे से 5 बजे तक चराना चाहिए। दोपहर के समय में अधिक धूप–गर्मी से बचाना चाहिए। सुबह या शाम को 200–250 ग्राम दाना प्रति बकरी देना चाहिए।

पीने का पानी स्वच्छ एवं पूरी मात्रा में मिलना चाहिए।

## रखरखाव तथा बीमारियों से बचाव

छोटे बच्चों को जन्म के बाद से ही फेन्सा देते रहना चाहिए। इसमें पोषण के अलावा रोग निरोधक शक्ति भी निहित होती है। छोटे बच्चों को ठंडक से बचाना चाहिए। समय–समय पर परजीवी से बचाव के लिए दवा पिलानी चाहिए। समय–समय पर मल जांच कराकर उचित कृमिनाशक दवाई दें। आवश्यकता पड़ने पर पशुचिकित्सक से सलाह लें।

## बकरी का दूध

यह दूध अति सुपाच्य है, और मनुष्य के छोटे बच्चों के लिए अत्यधिक लाभकारी है। इसके सूक्ष्म पोषक तत्व जल्दी ही पच जाते हैं। इसमें शरीर पोषण की अधिक क्षमता है, जो माता के दूध के समतुल्य है तथा इसमें रोग–प्रतिरोधक गुण भी मौजूद हैं।

## बकरी पालन सम्बंधित आवश्यक बातें

बकरी पालकों को निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना चाहिए :

- *ब्लैक बंगाल* बकरी का प्रजनन बीटल या सिरोही नस्ल के बकरों से करावें।
- पाठी का प्रथम प्रजनन 8–10 माह की उम्र के बाद ही करावें।
- बीटल या सिरोही नस्ल से उत्पन्न संकर पाठी या बकरी का प्रजनन संकर बकरा से करावें।
- बकरा और बकरी के बीच नजदीकी संबंध नहीं होनी चाहिए।
- बकरा और बकरी को अलग–अलग रखना चाहिए।
- पाठी अथवा बकरियों को गर्म होने के 10–12 एवं 24–26 घंटों के बीच दो बार पाल दिलावें।
- बच्चा देने के 30 दिनों के बाद ही गर्म होने पर पाल दिलावें।
- गाभिन बकरियों को गर्भावस्था के अन्तिम डेढ़ महीने में चराने के अतिरिक्त कम से कम 200 ग्राम दाना का मिश्रण अवश्य दें।

- बकरियों के आवास में प्रति बकरी 10–12 वर्गफीट की जगह दें तथा एक घर में एक साथ 20 बकरियों से ज्यादा नहीं रखें।
- बच्चा जन्म के समय बकरियों को साफ–सुथरी जगह जैसे– पुआल आदि पर रखें।
- बच्चा जन्म के समय अगर मदद की आवश्यकता हो तो साबुन से हाथ धोकर मदद करना चाहिए।
- जन्म के उपरान्त नाभि को 3 इंच नीचे से नए ब्लेड से काट दें तथा डिटॉल या टिन्चर आयोडिन या वीकांडिन लगा दें। यह दवा 2–3 दिनों तक लगावें।
- बकरी के बच्चों को खास कर ठंड से बचाएं।
- बच्चों को माँ के साथ रखें तथा रात में माँ से अलग कर टोकरी से ढक कर रखें।
- नर बच्चों का बंध्याकरण 2 माह की उम्र में करावें।
- बकरी के आवास को साफ–सुथरा एवं हवादार रखें।
- अगर संभव हो तो घर के अन्दर मचान पर बकरी तथा बकरी के बच्चों को रखें।
- बकरी के बच्चों को समय–समय पर टेट्रासाइक्लिन दवा पानी में मिलाकर पिलावें। जिससे न्यूमोनिया का प्रकोप कम होगा।
- बकरी के बच्चों को कोकसोडिओसीस के प्रकोप से बचाने की दवा डॉक्टर की सलाह से दें।
- तीन माह से अधिक उम्र के प्रत्येक बच्चों एवं बकरियों को इन्टेरोटोक्सिमिया का टीका अवश्य लगवायें।
- बकरी तथा इनके बच्चों को नियमित रूप से कृमिनाशक दवा दें।
- बकरियों को नियमित रूप से खुजली से बचाव के लिए बुटाक्स (Butox) लगायें या टेटमोसाल साबुन से नहलायें तथा आवास में छिड़काव करें।
- बीमार बकरी का उपचार डॉक्टर की सलाह पर करें।
- नर का वजन 15 किलो ग्राम होने पर मांस हेतु बाजार में ले जाएं।
- खस्सी और पाठी की बिक्री 9–10 माह की उम्र में करना लाभप्रद रहता है।

**प्रकाशक** : निदेशक, भाकृअनुप–भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान, कानपुर–24
**संकलन** : डॉ. राजेश कुमार, प्रधान वैज्ञानिक एवं विभागाध्यक्ष (कार्यवाहक), सामाजिक विज्ञान विभाग
**संपादन** : डॉ. राजेश कुमार श्रीवास्तव
**प्रकाशन सं.** : 06 / 2021
**मुद्रित** : 2021